[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3637

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकृतियों में रंगो का संयोजन (चित्रकार ''राजा रवि वर्मा'' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. डॉ.संगीता अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक
स्नात्कोत्तर चित्रकला विभाग, माधव महाविद्यालय, ग्वालियर

चित्रण में रंगो की '' स्प्रेस क्रिएटिंग प्रापर्टी '' को रचने वाले चित्रकार राजारविवर्मा का जन्म 29 अप्रैल 1848 ई. में किलीमन्नूर में हुआ। उनकी चित्रकला रूचि को उनकी चित्रांकन रूचि उनके मामा राजवर्मा ने बढावा दिया। चित्रकला रूचि को देखकर उनके मामा अत्यंत प्रसन्नचित्त हुये और कहा कि ''मनुष्य को केवल सिखा देने से कुछ नहीं आता। कुछ गुण उसमें पैदाइशी होते हैं। मैं तुझे रंग बनाना सिखाऊॅगा, पत्ते, फूल, रासायनिक दृव्य अनेक जाति और रंग की मिट्टी आदि से रंग तैयार होते हैं, लेकिन अपनी मर्जी का रंग तो कलाकार को ही खोजना पड़ता है।''1

विशेषतायें :–विशेष रूप से उन्होने प्राचीन वेषभूशा एवं धार्मिक कथाओं, तत्कालीन लोक जीवन एवं नाटक मंडलियों से प्रेरणा लेकर उसी आधार पर देवी–देवताओं एवं पुराणों संबधी विशयो को लेकर चित्रांकन में आकृतियों को रंगो से अलंकृत किया। मुख्यतः रविवर्मा को सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परंपरागत विषय के चित्रों को चित्रित करने एवं अपने ग्राम किलीमन्नूर की कथकली, धुल्लल कला शैलियों का चित्रण करने में गहन रूचि थी।

इनके चित्रण के आकर्षण एवं सुंदर रंग संयोजन से प्रभावित होकर महाराजा ने रविवर्मा को ''वीर श्रृखंला'' सम्मान से नवाजा जो कि त्रावणकोर दरबार का सबसे बड़ा सम्मान माना जाता था। महाराजा ने '' वीर श्रृखंला '' सम्मान देते हुये कहा – ''रवि वर्मा'', यह ''वीर श्रृखंला '' हैं। आज से तुम अपनी कला से बद्व रहोगे। इस कला से तुम हमारा, हमारे राज्य का और हमारे देष का नाम बढाते रहोगे। .... परमेष्वर तुम्हें यह शक्ति दे, यही कामना है। .... अब लोग सही अर्थो में तुम्हें ''राजा रविवर्मा के नाम से पहचानेगें।''2

मुख्य रूप से नारी के आकर्शित रूपों को चित्रांकित किया। ''राजारविवर्मा की नारी आकृतियॉ सुन्दर देह दृष्टि वाली, दीर्घ केष युक्त एवं भावात्मक मुख मुद्रा लिए हैं।''3 विशेषतः उनके पौराणिक चित्रों की मॉग होने पर ''राजा रविवर्मा'' ने अपने चित्रों के प्रकाशनार्थ बंबई में लीथोग्राफ प्रेस खोला और उसी के द्वारा रविवर्मा के चित्र सारे देश में प्रचलित हो गये। उनके द्वारा अंकित पौरणिक चित्रों का विशेष आदर हुआ। आज भी रविवर्मा प्रेस चित्र प्रकाशन करता हैं।''4 चित्रों की छपाई हेतु इस प्रेस के साथ ही अन्य स्थानों जैसे– बड़ौदा, मैसूर, त्रावणकोर, त्रिवेन्द्रम, उदयपुर, हैदराबाद आदि में भी ऐसे ही प्रेस खोले गये।''उन्होने मुद्रित चित्रों का एक आंरभिक स्तर निर्धारित किया और उसी के आधार पर ''भारतीय कैलेण्डर कला'' का विकास हुआ।''5

चित्रितकृतियॉ एवं रंग संयोजन :–राजा रविवर्मा की कृतियों के संदर्भ में अध्ययन विश्लेषण की दृष्टि से यह कहना उपयुक्त होगा कि वे बचपन में रंगो से तूलिका के सहयोग से उन्होने अनेक चित्र बनाये किन्तु जो प्रथम चित्रांकन किया। वह प्रकृति चित्र था, जिसमे उन्होंने गेरूए रंग से सुन्दर पत्ता चित्रित किया। उनके चित्र रंग संयोजन, विषयवस्तु, छायाप्रकाष, परिपेक्ष्य, संवेदनाओं, अनुभूति आदि से परिपूर्ण थे। अतः उनके मुख्य चित्रकृतियों की रंग संयोजन की संक्षिप्त व्याख्या इस षोध पत्र में वर्णित करने का प्रयास किया हैं। जो इस प्रकार हैं।

1. **शकुन्तला** :– नारी शक्ति की प्रतिमूर्ति मानी जानी वाली चित्रकृति शकुन्तला अपनी सखियों के साथ पुष्पों के आभूषणों से अलंकृत है। सम्पूर्ण चित्र में रंगो का संयोजन अत्यधिक आकर्षक प्रतीत होता है। शकुंतला के वस्त्र लाल रंग में अंकित है। छाया प्रकाश का सुन्दर सामंजस्य एवं आकृतियों की रेखाऍ लोचदार है।
2. **राम द्वारा समुद्र का मान भंग** :– राजा रविवर्मा की यह चित्रकृति में राम द्वारा सागर के गर्वमर्दन का वर्णन है। इस चित्र में रंगों के प्रयोग से सागर की उठती लहरों को जिस प्रकार संयोजित किया, वह अति आकर्षक प्रतीत होता है। लाल एवं हल्के नीले रंग के प्रयोग से लहरों को तथा गहरे नीले रंग का कहीं–कहीं प्रयुक्त हुआ है। ''बायीं ओर क्रोधित राम का चित्रण है।''6 उनके वस्त्र का रंग हल्का पीला हैं।
3. **श्री कृष्ण और बलराम** :– यह चित्र श्री कृष्ण व बलराम का हैं। बहुरंगीय वर्णो से सज्जित यह चित्र रंग व रेखाओं से पूर्ण दक्षता लिये हुये हैं। देवकी की साड़ी लाल रंग की है। वसुदेव के वस्त्र क्रीम कलर से चित्रित हैं। ये दोनों बालक देवकी और वसुदेव जी को कंस के कारागार से मुक्त कराते हुये दर्शित हैं। सम्पूर्ण चित्रण में रंगो के छाया प्रकाश का सुंदर सामंजस्य हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

4. **रावण और जटायू** :– प्रस्तुत चित्रकृति रामायण के प्रसंग सीता हरण से संबधित हैं। इस चित्रण में सीता का हरण करते रावण को अंकित किया गया हैं। गिद्व राज जटायू सीता को बचाने के लिये रावण से युद्व करते दर्शाये गये हैं। गिद्वराज जटायू के पंख भूरे व काले रंग के अंकित है। रंग संयोजन की दृष्टि से यह चित्र बहुरंगीय आकर्षक रंगो का प्रयोग एवं भावांकन हृदय को छूने वाला है। यह चित्रकृति चित्रालयम् गैलरी, त्रिवेन्द्रम में सुरक्षित है।
5. **अर्जुन और सुभद्रा** :– तैल रंगाकन में बनी चित्रकृति अर्जुन और सुभद्रा की है। इन दोनो को चित्रण में प्रणय पूर्व स्थिति में दर्शाया गया है। चित्र में पीले एवं लाल रंग की अधिकता है। पीले रंग के वस्त्रों से अर्जुन एवं लाल रंग के वस्त्रों से सुभद्रा सुसज्जित है। कहीं–कहीं हल्का भूरा तथा चमकीले रंग का भी प्रयोग हुआ है। आकृतियों में सौन्दर्य समायें इस चित्र की रेखायें व रंग संयोजन आकर्षित करने वाला है।
6. **विश्वामित्र और मेनका** :– इस कृति में दाड़ी मूछों से युक्त विश्वामित्र को बाघाम्बर पर तपस्वी की भॉति तटस्थ भाव से आसीन चित्रित किया गया है। उनके बांये में उत्तेजक लाल रंग की साड़ी पहने मेनका को फूल लिये हुये निहारती ऑखों से प्रदर्शित किया गया है। दृश्य में चारों ओर हल्का प्रकाश दिखाई देता है। रगों की पूर्णता को दर्शाता इस अंकन में मुख्य रूप से पीला, लाल तथा कहीं–कहीं काले रंग का प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष :– अन्ततः राजा रवि वर्मा के चित्रों का अद्भुत चित्रांकन एवं रंग संयोजन का आकर्षण देखते ही बनता हैं। सौन्दर्यात्मक, कला तत्वों से परिपूर्ण उनके चित्र भारत की अमूल्य निधि हैं। भारत की सांस्कृतिक परंपरा को कलात्मक अभिरूचि से अभिराम वर्ण सौष्ठव के माध्यम से जीवन्त बनाने वाले चित्रकार राजा रविवर्मा ने इस सुखमय संसार से 9 अक्टूबर सन् 1906 ई. में विदा ली।

इस प्रकार रंगो का उत्कर्ष प्रयोग एवं छाया प्रकाश में निपुणता प्राप्त भारतीय कला के श्रेष्ठ कलाकार राजा रविवर्मा की कृतियों के अध्ययन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उन्होने मुख्यतः धार्मिक, पौराणिक कथाओं, व्यक्ति चित्रों आादि विषयो पर रूप व रंगों से परिपूर्ण संयोजनो को अंकित किया जो आज भी हमें आकर्शित करता है। विषेशतः तैल रंग माध्यम से चित्रित उनकी कृतियों में अपार सौन्दर्य व विभिन्न आकषर्क रंगो का समायोजन था। जो वर्तमान में भी प्रशंसनीय एवं अद्वितीय है।

संदर्भ सूची :–

1.राजा रविवर्मा, रणजीत देसाई, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993 पृ.–23
2.वही.पृ.–67
3.डॉ. संध्या पाण्डेय एवं डॉ. आर.पी. पाण्डेय, भारतीय कला पुर्नजागरण एवं चित्रकार, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1997, पृ.–34
4.डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पृ.–268
5.डॉ. गिरिराज किशोर अग्रवाल, आधुनिक भारतीय चित्रकार, संजय पब्लिकेशन, आगरा, पृ.– 18
6.डॉ. किरण प्रदीप, भारतीय आधुनिक कला, कृश्णा प्रकाशन मिडिया, मेरठ पृ.– 1.18